क्वांटम हीलिंग & डीप रूट कॉज ऑफ इल्लनेस by डॉक्टर सारिका (डॉक्टर जो कभी नहीं बताएंगे)

सब को परम शांति। अभी कुछ दिन पहले क्वांटम हीलिंग के ऊपर एक वीडियो आया था और मैं अक्सर डिजीज के बारे में भी ज्ञान को लेकर और मॉडर्न साइंस को लेकर सोचती हूं। तो यहां भी को-रिलेशन मेरे मन में आया कि हमारे शरीर का जो प्रकाश तत्त्व है। वो एग्जैक्टली हमारे शरीर में क्या कर रहा है। दूसरी तरफ क्वांटम हिलिंग में यह चीज देखी गई कि जब कोई भी व्यक्ति मतलब ऐसे-ऐसे केसेस देखे गए कि चाहे वो किसी भी हाई स्टेट के अंदर मतलब बहुत ही एडवांस डिजीज की स्टेज में भी थे और जब उनको डॉक्टर ने सजेस्ट किया कि आप मेडिसिन के थ्रू नहीं, आप मेडिटेशन के रास्ते पर जाकर ठीक हो सकते हो। आप अपने सबकॉन्शियस माइंड की प्रोग्रामिंग को चेंज करके ठीक हो सकते हो। तो क्वांटम हिलिंग में ऐसा देखा गया कि कुछ लोग ठीक हो गए और कुछ लोग ठीक नहीं हुए। तो मन में मेरे, यह पढ़ने के बाद, यह मन में प्रश्न आया कि ऐसा क्यों हुआ कि यह प्रिंसिपल कुछ आत्माओं पर अप्लाई हुआ और कुछ लोग रिकवर हो गए और ऐसे डिजीज से रिकवर हो गए। जिनको मॉडर्न साइंस के पास जिनका आज कोई इलाज ही नहीं है और कुछ लोग रिकवर नहीं हुए। तो वाई वॅट इज द बेसिक रीजन ऑफ वेरिएशंस।

एक दूसरा मेरे अंदर हमेशा, एक डिजीज जब कोई भी डिजीज हमारे शरीर में होती है। उसका रूट लेवल क्या है। यह मेरे अंदर जानने की बहुत गहरी इच्छा रहती थी। मुझे लगता है कि इसका भी अंसर मुझे कुछ हद तक मिलने लगा है। वो भी मैं आप के साथ शेयर कर रही हूं। देखिए सबसे पहली बात कि जब हम क्वांटम हिलिंग की बात करते हैं। क्वांटम हिलिंग का मतलब है कि हम क्या हैं। हम बेसिकली इनर्जी बिंगस हैं। तो जब हम अपने आप को इनर्जी बिंगस कंसीडर करते हैं। तो इनर्जी की दो प्रॉपर्टीज होती हैं। एक होता है, पार्टिकल लाइक करैक्टर। एक होता है, वेव लाइक करैक्टर। पार्टिकल लाइक करैक्टर हमारे शरीर में मैटर का निर्माण करता है। मतलब हमारे शरीर के अंदर जो भी पांच तत्त्व बने हुए हैं। वो किसी ना किसी मैटर से मिलकर बने हैं। तो हमारे शरीर के अंदर, हमारी इनर्जी का लाइक पार्टीकल करैक्टर क्या कर रहा है। हमारे शरीर में मैटर का निर्माण कर रहा है। दूसरा है, हमारे शरीर का वेव लाइक करैक्टर। यह बहुत ही इंटरेस्टिंग फैक्ट है कि वेव लाइक करैक्टर, हमें क्या कर रहा है। हमें इस पूरी की पूरी इन्टायर सृष्टि, इन्टायर क्रिएशन के साथ कनेक्ट कर रहा है। तो हम कहते हैं ना। हम आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं या भगवान को हम अपने मन में सोचते हैं और भगवान हमारी बात तुरंत जान लेते हैं। तो यह सब कौन रेगुलेट कर रहा है। यह है, हमारा वेव लाइक करैक्टर। वेव लाइक करैक्टर मतलब जहां भी वेव्स होती हैं। वो आपस में कोहेरेंस का इफैक्ट शो करती है। मतलब सिमिलर वेव्स आपस में कंबाइंड हो जाती हैं। इसी तरह से जब हम कहते हैं कि जब हम अच्छा सोचते हैं, सोचते हैं... , अच्छा करते हैं। तो अच्छा ही अच्छा आता चला जाता है। मतलब जो हम दुनिया में देते जा रहे हैं। वो ही कर्म हमारे पास वापिस लौट कर आ रहे हैं। तो कोई मकैनिज्म होगा ना कि कैसे वापिस आ रहा है। लौट कर कैसे हमारे शरीर का हिस्सा बन रहा है। कैसे व्यवहार का हिस्सा बन रहा है। तो इसी तरह से यह हमारा वेव लाइक करैक्टर। तो वेव लाइक करैक्टर हमारे शरीर में कौन रेगुलेट कर रहा है। हमारे शरीर का प्रकाश तत्त्व। अब इसको हम देखते हैं। देखिए पहली बात कि जब कुछ लोग, जैसे मैंने भी बुक पढ़ी थी। मैंने कुछ एक-दो चैप्टर्स ही पढ़े थे। तो मैंने उसमें देखा कि कुछ ऐसे केसेस कहे। जो 4th स्टेज में, एडवांस स्टेट में चले गए थे। डॉक्टर ने उनको रेकमेंट किया कि आप अपने आप यह मेडिटेशन करो कि आपके शरीर की वाइट ब्लड सैल्स, जो हमारे शरीर को प्रोटेक्ट करते हैं। वो आप के कैंसर सैल्स को किल कर रहे हैं और कुछ लोगों ने बड़ा डेडीकेटेली इंप्लीमेंट किया और कुछ महीने बाद देखा गया कि वो रिकवर हो गए। तो देखिए यहां पर क्या हुआ। मन की ही स्थिति ने उस इंसान को क्योर कर दिया। इसका मतलब हमें यह समझना चाहिए कि हमारी बॉडी में कितना इमेजिंग हिलिंग पोटेंशियल है। तो हम हर समय एक -ve पाथ को ही अडॉप्ट करते हैं और हम एक +ve पाथ की ओर जा ही नहीं पा रहे। मतलब अंदर ही एक इनबिल्ट मकैनिज्म है और हम उसे नहीं समझ रहे और हम यह सोच रहे हैं। हम बाहर से कोई मेडिसन खा कर के ठीक हो जाएंगे। यही गल्त रास्ता है। यह कैसे है। देखिए मन को हमें पहले समझना होगा। हमारे शरीर के अंदर यह प्रकाश तत्त्व है और जो भी हम बोलते हैं। इसकी पूरी की पूरी रिकॉर्डिंग हमारे प्रकाश तत्त्व में होती है। तो मैं ऐसा मानती हूं। मुझे ऐसा लगता है कि मन क्या है। हमारे शरीर की वाइब्रेशनल फील्ड है और पूरी क्रिएशन के अंदर यह वायु तत्त्व है और जो आकाश तत्त्व है। इनके अंदर भी हाई इनर्जी फिल्डस है और हम, क्योंकि इनर्जी विंग्स। तो

हमारे शरीर का वेव लाइक करैक्टर, हमें सिमिलर इनर्जी फील्ड की वेव लाइक कैरेक्टर से कनेक्ट कर देता है। इसलिए जब हम किसी -ve पाथ की ओर जाते हैं। आप देखेंगे। जैसे पहले भी देखा गया। जैसे मान लीजिए। किसी इंसान के अंदर एक चोरी की आदत बचपन से थी। पता लगा। वो आगे बड़ा होकर के डाकू बन गया। कोई मकैनिज्म होगा ना कि जो बचपन से ही चुराता था। वो -ve बिहेवियर था। वो बाद में जाकर डाकू क्यों बन गया। क्योंकि उसको वो ही आदत पड़ गई। तो यह आदत के बढ़ने का मतलब क्या कि उसके शरीर के मन में या हम यह कहें। उसके शरीर के मन की उस वाइब्रेशनल फील्ड ने उसे बाहर। क्योंकि बाहर क्या है। हाई इनर्जी भी है, लो इनर्जी भी है। जिसने भी जो कर्म किया। जिससे ही यह पूरे का पूरा वातावरण बना। जो भी कर्म हुआ। वो हर कर्म की रिकॉर्डिंग है। इसमें हाई इनर्जी और लो इनर्जी फील्डस दोनों ही आप के लिए अवेलेबल हैं। लेकिन आप अंदर से जो हो। वो ही आप बाहर से ग्रहण करते हो।

तो हम यह कह सकते हैं। हमारे शरीर का जो यह इनर्जी बिंग्स हैं, हम। उसकी जो हर इंडिविजुअल की अपनी एक इंडिविजुअल वाइब्रेशनल फील्ड है और वो वाइब्रेशनल फील्ड ही बाहर के वाइब्रेशनल फील्ड के साथ कनेक्ट होती है। यही एक मकैनिज्म है। फिर वो ही सिमिलर वेव्स आपस में कम्बाइंड हो जाती हैं और वो ही इनर्जी उसके अंदर ओर रिस्टोर होती जाती है, रिस्टोर होती जाती है... और वो ही उसका एक पक्का संस्कार बन जाता है। वो चाहे अच्छा हो। वो चाहे बुरा हो। अब हम देखते हैं कि हमें ज्ञान क्या समझाता है। हमें ज्ञान यह समझाता है कि हर आत्मा आपस में एक दूसरे से अलग-अलग है। हर आत्मा की ताकत भी अलग-अलग है। क्योंकि हर आत्मा का क्रिएशन और उसका निर्माण अलग-अलग जगह पर हुआ है। आत्मा शिवपुरी में बनी है। विष्णुपुरी में भी बनी है। ब्रह्मापुरी में भी बनी हैं। ब्रह्मांड में भी बनी हैं। गैलेक्सी में भी बनी हैं। यूनिवर्स में भी बनी हैं। ग्रेट यूनिवर्स में भी बनी हैं। तो हरेक के अंदर इंटरनल इनर्जी का रिस्टोरिंग पोटेंशियल है। वो हरेक का अलग-अलग है। मान लीजिए। हम दो केस कंसिडर करते हैं कि क्वांटम फील्ड आज की तारीख में यह नहीं जानते कि यह जो वाइब्रेशंस आया। कोई रिकवर हो गया। सेम पाथ को बता कर। कोई रिकवर नहीं हुआ और कोई क्यों नहीं हुआ। इसमें हमें ध्यान से समझना चाहिए। देखिए सबसे पहली, हमारे अंदर तुरंत बदलाव कभी महसूस करें। तो हमारे अंदर कंडीशन पर तुरंत बदलाव आ जाता है। जैसे मान लीजिए। कोई एक इंसान कैंसर के बहुत हाई स्टेट में पहुंच गया और वो डॉक्टर के पास विजिट करता है। डॉक्टर उसको बताता है कि आप बिल्कुल एडवांस स्टेज में हो। आप के पास लाइफ टाइम इतना ही बचा है। अब दो तरह की आत्माएं हैं। एक आत्मा तो है। अच्छा, कैंसर का नाम सुनते ही फर्स्ट रिस्पांस माइंड में क्या आएगा कि इसका तो अब कोई इलाज नहीं है। अब मेरी लाइफ बिल्कुल कम है। यह ऑटोमेटिक एक पाथ वे है। जो इम्मिडेटली ही शुरू हो जाएगा। क्योंकि हर आत्मा की इंटरनल पोटेंशियल अलग-अलग है, हर आदमी का। तो हर आत्मा की जो पोटेंशियल है। अब अलग-अलग तरह से अपने लिए तैयार करेगा। कोई हीलिंग के पाथ को अडॉप्ट करेगा और कोई हीलिंग के पाथ को अडॉप्ट नहीं करेगा। कोई सेम रेगुलर मेडिसन पर ही जाएगा। जो लोग फॉलो करते हैं। कीमो थैरपी है। कुछ पेशेंट ऐसे देखे गए। मुझे कोई कीमो थैरपी नहीं करानी है। मैं तो अपने पाथ पर जाऊंगा। तो क्या है, यह डिसीजन जो है। एक एबिलिटी है। किस पर डिपेंड कर रही है। आत्मा की पावर पर डिपेंड कर रही है। अब हम देखते हैं। अगर यही आत्मा की पावर, अब जब उसने मान लीजिए कि यदि हम एक कॉमन रिस्पांस देखें।

लास्ट स्टेज में हो। तो क्या होगा। एक माइंड सेट होगा। ऑटोमेटिकल माइंड सेट होगा। उसको जो भी रास्ता मिलेगा। उसको करने के लिए तैयार हो जाएगा। अब हम यहां पर मानते हैं। कोई एक आत्मा ऐसी है। जो अंदर से पॉवरफुल, वो उस बात को सोचती है। देखो, बाहर तो मेरे पास रास्ता है, नहीं। दवाओं के सहारे में ठीक हो नहीं सकता। तो क्यों ना, मैं ऐसे रास्ते को अपनाऊं। जो मुझे डॉक्टर सजेस्ट कर रहे हैं। डॉक्टर मुझे यह समझा रहा है कि मैं यदि सबकॉन्शियस माइंड के पैटर्न को इस मैडिटेशन के थ्रू चेंज करूं। तो मैं चेंज हो सकता हूं। अब इसके पास ओर रास्ता तो है, ही नहीं। उसे पता है। मैं दवाओं से ठीक हो नहीं सकता। उसे पता है, कीमो थैरपी के क्या-क्या साइड इफेक्ट्स हैं। तो वह क्या करेगा। वो उस समय में यह उसकी चॉआइस है। तो वह एक सेफ वे पाथ को अडॉप्ट करेगा और जो आत्मा अंदर से पावरफुल है और वो सेफ रास्ते को अडॉप्ट कर लेती है। उसी समय में वो अपने हीलिंग मकैनिज्म को इनीशियेट कर देती है और जब वो प्रोग्रामिंग चेंज करती है। यह जो उसने इनीशियेट किया। तो उसने अंदर से भी इस डिसीजन में क्या करा। अपने मन के अंदर के वाइब्रेशनल फील्ड को चेंज कर

दिया। अब वो उसी समय में क्या करेगा। व़ो बाहर के भी उसी वाइब्रेशनल फील्ड से कनेक्ट हो जाएगा और उसके अंदर धीरे-धीरे... जैसे-जैसे मेडिटेशन करता जाएगा। वो उसी इनर्जी फील्ड का रिसीवर बन गया और क्योंकि वो उसी इनर्जी फील्ड से डेफिसिट था। वो अपनी उसी इनर्जी डेफिसिट को ही मेडिटेशन के थ्रू पूरा कर रहा है। अपनी आत्मा की पावर को बढ़ा रहा है और एक +ve इनर्जी फिल्ड अपनी बॉडी को दे रहा है और सैल्स क्यों बीमार पड़े थे। वो इंसान क्यों बीमार पड़ा। वह सैल इनर्जी क्यों डेफिसिट हुई। इसका भी एक रिजन है। वो अभी मैं बाद में बताती हूं।

तो इसी तरह से क्वांटम फील्ड क्या है। बेसिकली, क्वांटम फील्ड को हम यह कह सकते हैं कि हमारे मन की वाइब्रेशनल फील्ड है। जो हमें इस पूरी क्रिएशन के साथ उसी वाइब्रेशनल फील्ड से कनेक्ट करती है। जिसने फुल डिटरमिनेशन के साथ एक पहले +ve डिसीजन लिया। फिर उसको इंप्लीमेंट करना शुरू किया। तो धीरे-धीरे... जैसे वो अपना उसे इंप्लीमेंट करता जाएगा। वो उस पावर को अपने अंदर रिस्टोर करता चला जाएगा और सैल बीमार मतलब डेफिसिट, इसलिए हुए थे। क्योंकि इनर्जी कम थी। अब वो उसी इनर्जी को मेडिटेशन के थ्रू, +ve वाइब्रेशन के थ्रू। अपनी उसी डेफीसिट इनर्जी को पूरा कर रहा है। वो सैल बिना किसी मेडिसन के रिक्वर हो गए और वो इंडिविजुअल ठीक हो गया। जो आत्मा की पावर कम थी। उसने कीमो थैरपी का रास्ता अपनाया। उसने वो ही रास्ता अपनाया। कुछ आत्मा बहुत ही कमजोर भी रही होंगी कि पता चला। मुझे कैंसर है। छ: महीने बाद जाना था। तो दो महीने में ही चला गया या एक हफ्ते में चला गया। तो this differences basically just because of the internal power of the soul कि what decision it is taking. तो यह भी एक बिहेवियर ही है। जो अभी हमने पिछले वीडियो में बताया।

अब दूसरी चीज, हमारे शरीर में, अंदर बीमारी का आज की तारीख में मूल कारण क्या है। यह भी मैं बहुत बार गहराई से समझने की कोशिश करती हूं कि कलियुग के अंदर हम बहुत ज्यादा हेल्थ कॉन्शियस हो रहे हैं। बहुत नई-नई फिल्डस आ रही हैं नयूट्रेस्यूटिकल्स (Nutraceuticals) और दुनिया भर की चीजें। जिनके नाम भी, आज से 10 साल पहले हमने कभी नहीं सुने थे। आज इंसान ज्यादा टेस्टिंग की ओर, ज्यादा परफेक्टनेस की ओर जा रहे हैं। लेकिन फिर भी नए-नए डिजीज को अपने अंदर इनबिल्ट करते जा रहे हैं और मिलियंस ऑफ मिलियंस ऑफ मनी खर्च करने के बाद भी आज उसके पास कोई सलयूशन नहीं है। तो क्यों नहीं है। क्यों, हल नहीं निकलता। इसको मैंने स्प्रिचुअल पाथ पर चल कर समझने की कोशिश की। देखिए मैं एक बहुत सी सिंपल सी बात समझ पाई। हम पांच तत्त्वों से मिलकर बने हैं। जिसमें से हमारे शरीर के अंदर 70 से 80% पानी और 20% ओर तत्त्व हैं। इसका मतलब हमारे शरीर की हेल्दीअर स्टेट का मतलब है कि इन्हीं पांच तत्त्वों का बैलेंस होना और शरीर में किसी भी डिजीज का मतलब है। इन्हीं पांच तत्त्वों का डिसबैलेंस होना। जब कोई भी तत्त्व ज्यादा हो जाएगा और कोई भी तत्त्व कम हो जाएगा। यही इम्बैलेंस ही डिजीज है। बहुत ही कॉमन तरीके से देखें। आज हम क्यों बदल गए। आज हम बदल गए। अपने लाइफ स्टाइल के कारण। हमने क्या करा। हमारा जो लाइफ स्टाइल पहले होता था। आज जो हमारा लाइफ स्टाइल है। आज हमारा जिस तरह से रहने का तरीका है। हम धीरे-धीरे... नेचर से दूर होते जा रहे हैं और यही नेचर से दूर जाना। हमारे शरीर को चेंज करता चला जा रहा है। हमारे खाने पीने का तरीका। यह आपस में बहुत डीपली को-रिलेशन है। देखिए यदि हम पहले देखें। तो मुझे नहीं लगता। पहले के किसी भी युग में राक्षसों के इलावा मास कोई खाता होगा। तो ज्यादातर क्या थे, सब। शाकाहारी थे। अच्छा, शाकाहारी का मतलब। हम कोई भी डाइट ऐसी खा रहे हैं। जो हमें प्लांट से मिल रही है। अब हम एक चीज देखें। अब हम प्रकृति को ध्यान से देखें। तो एक दिन, मैं ऐसे ही सोच रही थी कि कोई तो कारण होगा। भगवान ने पेड़ को एक जड़ बनाया। मतलब उसकी पोजीशन को फिक्स कर दिया। दुनिया के अंदर हरेक क्रिएचर। चाहे वो एक माइक्रो क्यों ना हो। वो भी एक जगह से दूसरी जगह पर जाता है।

लेकिन प्रकृति ने अपने इस सिस्टम में व्यवस्था क्यों की कि पेड जो हैं। अपनी एक जगह से दूसरी जगह पर नहीं जा सकते। उस पेड की जगह फिक्स कर दी। उसके पीछे कोई कारण होना चाहिए। दूसरी चीज, इसका जो मुझे एक रिजन समझ में आया। यह आया कि देखिए हमें जो इनर्जी मिलती है। हम कांस्टेंटली हम एक पूरे क्रिएशन के इनर्जी पुल्ल से कनेक्टेड हैं। हम अलग नहीं हैं। यह बात अलग है कि हमें वो इनर्जी फील्ड दिखाई नहीं देती। लेकिन हम एक इनर्जी फील्ड से कनेक्टेड हैं। हमें

डायरेक्टली सन से इनर्जी मिलती है। हमें मून से इनर्जी मिलती है। हमें स्टार से इनर्जी मिलती है। वायु तत्त्व के अंदर अपना एक इनर्जी फील्ड है। तो हम इनर्जी से कनेक्टेड हैं। अब कोई भी प्लांट इस इनर्जी फील्ड में कुछ चीजें ऐसी हैं। जैसे वायु तत्त्व था। हमने इंडस्ट्रीज लगाईं। केमिकल्स रिलीज हुए। तो हमने क्या करा। हमारे इस कर्म से वायु तत्त्व इफेक्टेड हो गया। तो यह इनर्जी फील्ड हमारे इस कर्म के कारण डिस्टर्ब हो गई। हम यह कह सकते हैं। लेकिन आज भी कुछ इनर्जी फिल्डस ऐसी हैं। जिनको हम टच भी नहीं कर सकते। जैसे सन से आने वाली इनर्जी आज भी प्योर है। मून से आने वाली इनर्जी आज भी प्योर है। स्टार से आने वाली इनर्जी आज भी प्योर है। क्योंकि हम उसको इंटरविंग नहीं कर सकते।

लेकिन आप यदि प्लांट को देखो। प्लांट के अंदर बहुत ही ध्यान से देखें। तो फोटोसिंथेसिस का मेकैनिज्म होता है। मतलब फोटो मींस लाइट। सिंथेसिस मींस बनाना। इसका मतलब प्लांट्स अपना जो पोषण करते हैं। वो सन की इनर्जी को लेते हैं और उसको केमिकल इनर्जी में कन्वर्ट कर देते हैं। मतलब सूर्य के प्रकाश से ही हर पेड़-पौधा अपने भोजन का निर्माण करता है और जब हम कोई भी फल या सब्जी खाते हैं। तो वो ही केमिकल इनर्जी को लेते हैं। अब हमारे जो शास्त्रों में या युग युगांतर में पहले शाकाहारी भोजन किया जाता था। उसका अपना एक मीनिंग था। मीनिंग मतलब कि हमारे जो प्लांट्स हैं। वो हमेशा एक आप यदि बहुत ध्यान से देखो। तो एक बहुत डीप मेडिटेटिव स्टेट में हैं। प्लांट स्टेटिक हैं। मतलब प्लांट्स ऑल द टाइम वो नेचुरल इनर्जी को अपने अंदर इम्बाइब कर रहा है ना। आज यदि साइंस को भी आप देखो। तो साइंस यह बताती है कि आप पानी के ऊपर मून का इफेक्ट देखो। हर मून की साइकल में पानी का स्ट्रक्चर चेंज हो जाता है। जैसे हम देखते हैं ना। समुंदर के अंदर भी ज्वार भाटा आता है या जो हाई टाइड्स आती है। वो मून फेज में ही आती है ना। क्योंकि मैग्नेटिक-मैग्नेटिक फिल्डस चेंज हो जाती है। तो इसी तरह से प्लांट के अंदर भी पानी है। क्योंकि वो प्लांट्स ऑल द टाइम्स एक ही जगह पर खड़े होकर। मेडिटेटिव स्टेट के अंदर एक कांस्टेंट सन की इनर्जी, ऑल द टाइम्स जो सन की इनर्जी में भी पूरा दिन भर में एक जो पैटर्न है। जो इनर्जी का लेवल है। वो चेंज हो रहा है। जैसे सन राइज होता है। तो इनर्जी लेवल इज डिफरेंट। जब सन सेट होता है। तो इनर्जी लेवल इज डिफरेंट। जब मून राइज होता है। तो इनर्जी लेवल इज डिफरेंट। मून इज नॉट देयर, अमावस्या। तो इनर्जी लेवल इज डिफरेंट। तो कहने का मतलब है। प्लांट्स आर द ओनली स्पाइसेस विच आर इन कांस्टेंट टच विद द नेचुरल सोलर सिस्टम्स इनर्जी।

तो वो चाहे। जो भी इनर्जी है। उस पेटर्न को फॉलो कर रहे हैं और उस इनर्जी के साथ ऑल द टाइम्स टच में हैं और वो ही इनर्जी के साथ अपने फूड का मतलब अपने अंदर सिंथेसिस कर रहे हैं और उसी फूड को हम कंज्यूम कर रहे हैं। तो जितना हम प्रकृति के अंदर कनेक्ट होकर। जितना हम रॉ, हम कहते हैं ना। हम रॉ फूड खाने के बाद कोई बीमार नहीं पड़ता। तो कोई कारण होगा ना। हम बेसिकली, हम सोचते हैं कि हम कार्बोहाइड्रेट्स प्रोटीन फैट खाते हैं। मगर बेसिकली नहीं है। हम इनर्जी को ही कंज्यूम करते हैं और वो ही इनर्जी हमारे सिस्टम का पार्ट बनती है। यही एक सच्च है। दूसरी चीज, हम यदि इसको दूसरे तरीके से देखें। आज साइंस हमें यह बताती है। वो लोग पानी पर काम करते हैं कि पानी की दो फॉर्म होती हैं। एक होता है, पानी डैड वॉटर। एक जो हम पानी पीते हैं। जनरली डेड वॉटर है। डेड वॉटर हम इसलिए कहते हैं कि केमिकली तो वो भी तो H2O होता है। लेकिन हम यदि उसके स्ट्रक्चर को माइक्रोस्कोप में देखें। तो वो एक डिस्टोर्टेड डिस्ट्रक्चर होता है। डिस्टोर्टेड मतलब वो कैरियर का काम नहीं कर सकता। लेकिन जब यही पानी, सन के अंदर रखा जाता है। मून के अंदर रखा जाता है या हम इसको इंफ्रा रेज देते हैं। तो यही पाने का स्ट्रक्चर या हम +ve वाइब्रेशन देते हैं। मुंह से बोल कर हम लव कहते हैं। तो पानी का स्ट्रक्चर क्या होता है। एक ऑडरड, एक डायमंड लाइक बिल्कुल प्योर स्ट्रक्चर बन जाता है। तो यहां हमने क्या किया। जब हमने वाइब्रेशन दिया। तो हमने वो ही इनर्जी फील्ड से, उस पानी के अंदर, जो एलिमेंट्स हैं। उनके अरेंजमेंट्स को चेंज कर दिया। तो जब हमने फीलिंग के साथ लव कहा। तो लव वाइब्रेशन की इनर्जी फील्ड ने उस पानी के केमिकल स्ट्रक्चर को चेंज कर दिया। तो उसका एक दूसरा स्ट्रक्चर बन गया। जब हमने कहा पीस। तो दूसरा स्ट्रक्चर बन गया और हमने जब उस पानी को कंज्यूम किया। तो हम धीरे-धीरे लवफुल बिंग्स बन गए। इसका मतलब कि जो चीज हमने जो इनर्जी, जो वाइब्रेशन फील्ड। हमने उस पानी को दी। वो फिल्ड हमारी बॉडी का हिस्सा बन गई। इसी तरह से जब हमारे शरीर में जो डैड वॉटर होता है। हम कहते हैं ना। हमें सन लाइट में जाकर कोई बीमारी नहीं हुई। आज तक पुराने जमाने में जो घर होते थे। वो बिल्कुल खुले होते

थे। ऑल द टाइम्स मतलब ओपन सरफेसिस होता था। मतलब कोई बीमारियां ही नहीं थीं। क्यों नहीं थीं। क्योंकि जब आदमी धूप के अंदर काम करता था। खेतों में काम करता था। खुले घरों में रहता था। तो वहां वायु तत्त्व वैसे ही बैलेंस रहता था। उसके शरीर के अंदर जो पानी है। क्योंकि पानी डेड वॉटर, लिविंग वॉटर में सन लाइट की प्रेजेंस में भी इंटरकन्वर्ट होता है और जब पानी लिविंग होता है। तभी उस पानी के अंदर अपना एक जिओमैट्रिकल स्ट्रक्चर होता है। जिओमैट्रिकल स्ट्रक्चर आप के शरीर के अंदर पानी का काम क्या है। मतलब ब्लड के थ्रू किसी भी इनर्जी मॉलिक्यूल्स को एक सैल से दूसरे सैल में ले जाना।

मतलब पूरी बॉडी में ब्लड के थ्रू ही हमारे शरीर में जो भी फूड हम खाते हैं। वो सारा सर्कुलर होता है और बॉडी से सारा वेस्ट बाहर निकलता है। अब यह मान लें यदि हमारे शरीर में जो मॉलिक्यूल्स जिसको खाने को लेकर जाना है। यदि वो टूटा फूटा है। तो क्या वो ढंग से ले जा पाएगा। नहीं, लेकर जा पाएगा। तो आप आज खा तो पा रहे हैं। लेकिन जो खाना आप के शरीर के जिस पार्ट को मिला ही नहीं। वो पार्ट क्या हो गया। वहीं पर दर्द शुरू हो गया। दर्द का मतलब वो पार्ट आपके शरीर का कमजोर है। जिसको इनर्जी नहीं मिल रही है और वो इनर्जी से ब्लॉक हो गया। दूसरी चीज यह एक वो एक्सपेक्ट है। कहने का मतलब है। जब आप प्रकृति से जुड़ते हो। आप अपनी बॉडी को अर्थ (earth) के साथ कनेक्ट करते हो। आप अपनी बॉडी को वॉटर के साथ कनेक्ट करते हो। तो उस हिसाब से आप नेचर से जुड़ते जाते हो। तो वहां प्रकृति के साथ जुड़ने से ही, तुरंत ही बॉडी नेचुरल साइकिल की जो इनर्जी है। उसको रिसीव करने लग जाती है। एक दूसरी बात क्वांटम हीलिंग में हम देखते हैं। मन भी हमारे डिजीज को रेगुलेट करने में बहुत ही बड़ा रोल प्ले करता है। हमने अभी कहा कि हम बिंग्स ए ह्यूमन इनर्जी बिंग्स हैं। इनर्जी बिंग्स का मतलब है कि हमारे अंदर पार्टिकल्स और वेव लाइक करैक्टर हैं। कभी आप यह मान सकते हैं। सबका अच्छा चाहने वाले का कभी बुरा होगा। हम कहते हैं ना, कर्म लौटकर आता है। यह बोलते हैं ना या फिर किसी बुरा सोचने वाले का कभी अच्छा होगा। यह सोचने वाली बात है कि ऐसे कैसे हो रहा होगा। यह कर्म भी जो वापिस जा रहा है। वह किस रूप में जा रहा है और किस रूप में लौट कर आ रहा है। देखिए यह हम मान के चलते हैं। जो भी बुराइयां हैं। जैसे मान लीजिए गुस्सा है। किसी के प्रति क्रोध है। किसी के प्रति ईर्ष्या है। किसी के प्रति दर्द है। जरूरत से ज्यादा प्यार है। यह सब क्या है। हमारे माइंड की इमोशनल स्टेट है और यह माइंड की इमोशनल स्टेट का मतलब है कि यदि हमने किसी के प्रति जेल्सी को अपने मन में रख लिया। हमने किसी के प्रति गुस्से को अपने मन में रख लिया। ईर्ष्या को अपने अंदर, मन में, अंदर रख लिया। तो हमारे अंदर हमने क्या करा। हमने अपने लिए बीमारी का रास्ता खुद ही चयन किया। किस लिए किया। आप देखेंगे। जो इस पाथ पर चल पड़ता है। जो ज्यादा गुस्सा करने लगता है। ज्यादा जलने लगता है। ज्यादा परेशान रहता है। ज्यादा दुखी रहता है। वो आदमी बहुत ही कम समय में हॉस्पिटल पहुंच जाता है। उसका कोई कारण होगा। क्या हो गया, ऐसा। उस इंसीडेंस ने क्या किया, ऐसा। उस इंसीडेंस ने उसके मन को इफेक्ट करा। मन को इफेक्ट करने का मतलब है कि उसके अंदर की वाइब्रेशनल फील्ड को उसने इफेक्ट करा। जब किसी इंसान ने किसी के प्रति गुस्सा, ईर्ष्या, दर्द को अपने अंदर गहराई से पकड़ लिया। तो वो मान के चलें कि वो अपने शरीर में इन्टेंसली उस वाइब्रेशनल इनर्जी को उस लोअर वाइब्रेशनल इनर्जी को फिक्स कर दिया। अब वो क्या करेगी कि वो ऑटोमेटिकली, वो नेगेटिव इनर्जी के साथ ही, देखिए जो हम अंदर से हैं। वो ही हम बाहर से ले सकते हैं। तो हमने अपने आप को एक फिक्स पॉइंट दे दिया। अपने मन को नऊ वो उस फ्रीक्वेंसी की नेगेटिव इनर्जी अब ऑटोमेटिकली हमारे अंदर आती रहेगी। अब हमें प्रयास नहीं करना। शुरू में हमें ध्यान देना था। अब हमने उसको क्योंकि रिटेन कर लिया। तो जब हम उसको रिटेन करेंगे ना। ऑटोमेटिकली हमारे अंदर आती रहेगी और जब वो हमारे अंदर आएगी। तो वो नेगेटिव इनर्जी, वो भी धीरे-धीरे एक्युमुलेट होती चली जाएगी और यह नेगेटिव इनर्जी का एक्युमुलेशन ही फिर हमारे शरीर की फिजियोलॉजी को इफेक्ट करेगा और फिर बहुत जल्दी जहां हमने उस इनर्जी को स्टोर किया होगा। वहां से जो भी हमारा चक्र डिसबैलेंस होगा। वो इनर्जी चक्र जिस बॉडी सिस्टम या बॉडी ऑर्गन के साथ लिंक्ड होगा। वो पूरा का पूरा फिजियोलॉजिकल पार्ट इफेक्ट हो जाएगा और आप उस बीमारी से ग्रस्त हो जाएंगे।

इसलिए कहते हैं कि मन, बुद्धि और संस्कार। इसलिए कहते हैं ना। मन चंगा, तो कठौती में गंगा। यह कहावत, ऐसे ही नहीं बनी। इसका मतलब है कि हमारे शरीर के अंदर हर चीज का मूलभूत आधार भगवान ने मन ही बनाया है। तो हम यदि अपने मन को अच्छा कर लेंगे। मन को यदि हल्का कर लेंगे। तो मन को अच्छा और हल्का करने का मतलब है कि मन को हमने इतना लाइट कर दिया कि नऊ वी आर ऑटोमेटिकली बिकमिंग ए रिसीवर ऑफ द लाइट इनर्जी और द हाईएस्ट इनर्जी। विच

आर द प्रेजेंट ऑल अराउंड। तो क्या है। तो हम ऑल द टाइम। जो डिफरेंट इनर्जी को एक्सेप्ट करते जा रहे हैं। व़ो हम कौन सा रिसीवर बनते जा रहे हैं। यह हमारी इंटरनल चॉइस है। यह हमें कॉन्सियसली डिसाइड करना चाहिए। तो दिस लुक्स मे (may) दा राइट

क्वांटम हीलिंग पाथ। इसलिए मुझे लगता है। जिन्होंने क्वांटम हीलिंग को ट्रूअली एक्सेप्ट किया कि हां यह पॉसिबल है और इस मकैनिज्म को समझा। उसके लिए मुझे नहीं लगता कि हमें किसी भी बाहर के एक्सटर्नल मॉलिकयूल्स की जरूरत है। देखिए हमें यहां पर बहुत अच्छे से यह बात और आज यह मॉडरन साइंस को यह बात समझनी चाहिए कि हमारा बेसिकली रीजन जो है। हमारा मन ठीक है ना। तो हमें कोई बीमारी होगी ही नहीं। हम यदि अपने शरीर में पांच तत्त्वों को यदि बैलेंस करेंगें। तो हमारे शरीर में कोई बीमारी होगी ही नहीं। हमारे शरीर में भगवान ने न्यूरोटॉक्सिक जैसा कुछ नहीं बनाया। हम अपने शरीर में, अपने फूड स्टाइल से, अपने लाइफ स्टाइल से टॉक्सिक को क्रिएट करते हैं। उन्हें ऑब्जर्व करते हैं और उन्हें अपनी बॉडी में सर्कुलेट करते हैं। फिर हमारी बॉडी का मकैनिज्म चेंज हो जाता है। अब इसको भी एक एग्जांपल से समझते हैं।

हमें पता है। हमारे पांच तत्त्वों में 70 से 80% मान लीजिए पानी है। आज हमारा लाइफ स्टाइल जो है। फ़ूड की तरफ देखा जाए। तो कैसा होता जा रहा है। आज हम नेचुरल फूड खाने की बजाए। आज हम प्रोसैस्ड फूड खाते हैं। हम डायरेक्ट मिल्क लेने की बजाए। मिल्क प्रोडक्ट्स लेते हैं। हम बिस्किट खाते हैं। हम घर में खाना खाने की बजाए। हम बाहर रेस्टोरेंट में खाना खाते हैं। आप यदि इन फूड्स को देखो। जो कॉमनली मार्केट में अवेलेबल हैं। फूड के अंदर क्या है। उस फूड के अंदर या तो वॉटर कंटेंट्स हैं, ही नहीं। यह जितना भी पानी कहीं है। तो फुली डैड फॉर्म है। तो हमने जब वो फूड खाया। हमने सोचा। हमने पिज्जा खाया। हमने बर्गर खाया। हमने कुछ भी खाया। लेकिन हमने वो खाया। तो हमने खाया क्या। हमने तो नेगेटिव इनर्जी को ही कंज्यूम किया और नेगेटिव इनर्जी हमारे अंदर जाकर हमारे शरीर का एक हिस्सा बनने वाली है। तो यहां पर हमने कोई वॉटर एलिमेंट खाया ही नहीं। हमारे शरीर को बैलेंस करने के लिए पांचों तत्त्वों को बैलेंस करना जरूरी था। इसका मतलब हमें जो खाना, खाना चाहिए। वो वॉटर रिच होना चाहिए और कैसा वॉटर रिच जो रॉ फूड हो। जो हमें प्लांट्स से मिल रहा है, शाकाहारी भोजन। शाकाहारी भोजन के अंदर भी जो फल हम खाते हैं। जो सब्जियां हम खाते हैं। बेसिकली जब हम उसको रॉ कंज्यूम करेंगे। तो उसके अंदर भी वो ही प्रोपोशन जल तत्त्व का है और जल तत्त्व जो उस प्लांट के अंदर फूड मटेरियल में या वेजिटेबल्स के अंदर अवेलेबल है। वो कैसा वॉटर है। वो बायोलॉजिकल वॉटर है, रिमेंबर दिस। हमारे पास आज की तारीख में कोई भी लिविंग फॉर्म ऑफ वॉटर अवेलेबल नहीं है। एक्सैप्ट्स द प्लांट्स। इसलिए जब भी आप कोई रॉ फ़ूड खाएंगे। तो ऑटोमेटिकली आप के संदर्भ में, वो नेचुरल इनर्जी को ही इंबाइब नहीं करेगा। बल्कि आप उस फूड के साथ-साथ, उस सब्जी के साथ-साथ, आप अपने शरीर के अंदर, उस लिविंग वॉटर को भी इनकॉरपोरेट करोगे और लिविंग वॉटर का रोल तो पता ही है। क्योंकि लिविंग वॉटर तो अपने आप में ही एक बहुत सिमेट्रिकल वॉटर है। वो ही आप के शरीर में सभी चीजों को एक तरफ से दूसरी तरफ लेकर जा रहा है।

तो हम आज करते क्या हैं। हम सैलेड तो खाते नहीं। हम जिस तरह का फूड खाते हैं। वो बेसिकली क्या करता है। वो हमारी बॉडी में जाकर के डाइजेस्ट ही नहीं होता। मतलब दो चीजें हैं। एक तो वो डाइजेस्ट होगा नहीं। क्योंकि आप के शरीर के अंदर, हमारे शरीर के अंदर ऐसे कोई एंजाइन ही अवेलेबल नहीं हैं। जो इस डैड फूड को डाइजेस्ट कर सकें। जनरली आज साइंस यह भी कहती है। जितने भी लोग फाइटर केमिकल्स स्क्रीनिंग करते हैं। पल्सेस (pluses) के अंदर बहुत कुछ है। हमें यह समझना चाहिए। जब नेचर ने इसकी कवरिंग बनाई है। किसी भी फूड या वेजिटेबल्स के चारों तरफ। तो उन्होंने वो कवरिंग क्यों बनाई। आज मॉडर्न साइंस देखती है कि हां, यह फील्ड भी बहुत इंपॉर्टेंट है। इस फील्ड के अंदर भी यह-यह कंपाउंड हैं। हमें यह समझना चाहिए कि उस फील्ड के अंदर ही उस फ्रूट को या उस वेजिटेबल को डाइजेस्ट करने के एंजाइन मौजूद है। तो जब हम छिल्का उतार कर कोई चीज खाते हैं। तो हमने छिल्के के साथ-साथ उन एंजाइन को अलग कर दिया। जिसने उसे पचाना था और हमने उस डैड फूड को कंज्यूम कर लिया। वो भी बहुत सारे तरीके से प्रोसेस करके। तो हमने क्या करा। तो हमने अपने ही हाथों से नेचुरल इनर्जी को इंटरकन्वर्ट कर दिया। दैन वी आर थिंकिंग, दैट वी विल बीकम हेल्दी। इट्स ए फूलिश स्टेप। वो कभी भी नहीं होगा। दूसरी चीज कि जब हम कोई भी फ्रूट्स या वेजिटेबल्स या हम कोई भी ऐसी चीजें ना खा करके। जब हम यह डैड फूड खाते हैं। तो हमारे शरीर के अंदर, क्योंकि इनके एंजाइन्स नहीं होते। तो क्या होता है या तो यह फूड बहुत

ही ज्यादा टाइम लेता है, डाइजेस्ट होने में या फिर डाइजेस्ट ही नहीं होता। तो जब वो ज्यादा टाइम लेता है और डाइजेस्ट ही नहीं होता है। तो क्या होगा कि हमारे शरीर के अंदर, क्योंकि इस फूड के अंदर वॉटर नहीं है। वॉटर का कंटेंट कम होने से, हमारे इंटेस्टाइन, जब उस फूड को ऑब्जर्व करेगी। तो वो उसको प्रॉपर्ली एस्ट्रीट कर ही नहीं सकती। तो जब शरीर के अंदर पानी का कंटेंट कम है। तो आंतों के अंदर नमी कम है। तो हमारे शरीर में क्या होगा। वेस्ट रिलीज नहीं होगा और जब यह वेस्ट रिलीज नहीं होगा। तो यही हमारे शरीर के अंदर जाकर के हमारी इंटेस्टाइन को रिऑब्जर्व करेगी और यहीं से हमारे शरीर के अंदर न्यूरोटॉक्सिन बनने शुरू हो जाते हैं और फिर यही न्यूरोटॉक्सिन धीरे-धीरे... ब्लड के थ्रू हमारे पूरे शरीर में पहुंचते हैं और जब यह पूछते हैं। तो यह क्या करते हैं। बिकॉज़ दे आर स्टिक इन द नेचर। सो दे विल स्टिक ऑन द वॉल ऑफ द आर्टरीज।

जब यही आर्टरीज के ऊपर जाकर स्टिक हो जाएंगे। तब फूड का फ्लो कम हो जाएगा और जहां भी ब्लड का फ्लो कम होता जा रहा है। इसका मतलब हमारी बॉडी का वो ही पार्टिकुलर पार्ट ही, पार्टिकुलर ऑर्गन इनर्जी में डेफिसिट होता जा रहा है और जहां इनर्जी डेफिसिट होगा। वहीं से ही डिजीज का ओरिजिनेशन होगा। तो इसी तरह से एक दूसरी चीज हमें आज यह भी देखना है। क्योंकि हम अपना यह फूड और लाइफ स्टाइल अपना चेंज कर लिया। आज हम कभी भी, किसी भी मर्जी के समय पर खाते हैं। कैसे भी खाते हैं। सड़क पर खाते हैं। बाहर खाते हैं। कोई पॉजिटिव वाइब्रेशन के बिना खाते हैं। एक-दूसरे से छीन कर खाते हैं। इन सब ने हमारे अंदर क्या किया। हम ऑल द टाइम्स, नेगेटिव इनर्जी को रिसीव करते चले जा रहे हैं। आप यदि इस को ध्यान से देखें कि हमारे शरीर में दो प्रोसेस हैं। एक है, डाइजेशन। दूसरा है, हिलिंग। हम जो फूड खाते हैं। एक तो हमने फूड अपने स्टमक को डाइजेस्ट करने के लिए जिस एंजाइन की जरूरत थी। जो उस फ्रूट या वेजिटेबल में अवलेबल था। वो हमने निकाल दिया और हमने अब क्या करा। अपने डाइजेस्टिव सिस्टम को फोर्स किया कि अब हमने तुम्हें दे दिया। अब तुम इसको डाइजेस्ट करो। हमने कुछ भी मिलाया-खाया। हमने बोला। इसको डाइजेस्ट करो। वो डाइजेस्ट कहां से करेगा। उसके पास है, ही नहीं या तो फिर वो बहुत ही एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी स्टेप लेगा और तब वो जाकर के उसको डाइजेस्ट करेगा। यदि हम फ्रूट्स खाते हैं। तो वो तीन-चार घंटे में हमारा शरीर अब्जॉर्व करके, उसको डाइजेस्ट करके, अब्जॉर्व कर लेता है। लेकिन हम यदि कोई हैवी फ्रूट्स खाते हैं और हम मैकेनिकली वर्क करते नहीं। हम बैठे-बैठे खाना खाते हैं। हम सारा काम बैठे-बैठे ही चाहते हैं। आज की तारीख में हम चाहते हैं। हम ऑनलाइन आर्डर करें। हमारे पास चीजें आ जाएं। तो हमने अपनी फिजिकल एक्टिविटी को कम कर दिया और हमने उसके अंदर सिर्फ कंज्यूम करके, जो हमने जिस समय भी चाहें, जो मर्जी चाहें, हमने उसमें भरना शुरू कर दिया। तो यह कैसी स्टेट होगी। यह एक ऐसी स्टेट हो गई कि हमने जैसे किसी एक इंसान को कहा कि यह भारी वजन तुम उठाओ और तुम अभी 500 किलोमीटर तक जाओ। वो वेचारा किसी ना किसी तरह से, बिना किसी व्हेकिल की सहायता से, क्योंकि एंजाइन नहीं है। तो हम यह मान लेते हैं कि जो इंसान जा रहा है। उसके पास व्हेकिल नहीं है कि उसको कैसे जाना है। किसी तरह वो 500 किलोमीटर का रास्ता तह करके, वहां पर पहुंचा। तो वो कैसा हो गया। थका हारा हो गया। फिर उसको दोबारा कहा गया कि अब फिर तुम 500 किलोमीटर उठाओ। तुम फिर आगे दोबारा 500 किलोमीटर जाओ। तो आज की हमारे शरीर के ऑर्गन की स्टेट एक्चुअल में ऐसी ही हो गई है। हम जब जिस तरह से हम फूड को प्रोसेस करके बाहर के प्रोडक्ट खाते हैं। ड्राई प्रोडक्ट्स खाते हैं। उसमें हम अपने शरीर के ऑर्गन्स को फोर्स कर रहे हैं, फोर्स कर रहे हैं...। तुम इसको डाइजेस्ट करो, करो... और जब वो डाइजेस्ट करते हैं। वो पूरा डाइजेस्ट करने के बाद हमने उसको आराम दिया ही नहीं। तो उसमें क्या होता है कि जब हमारे शरीर में डाइजेशन हो रहा होता है ना। उस समय में हमारे शरीर में हीलिंग नहीं होती। शरीर की इनर्जी डाइजेशन में ही लग जाती है। वो हिलिंग नहीं होती। तो बॉडी में हमारे इस लाइफ स्टाइल से हो क्या रहा है। हमारे इंटरनल सिस्टम को हम खुद ही डिसबैलेंस कर रहे हैं। मतलब हम जब डाइजेशन कर रहे हैं। उस समय में तो हीलिंग हो ही नहीं रही और ऐसा तो नहीं है। हमारे शरीर के इस पूरे मेटाबॉलिक पाथ वे में कहीं भी वियर-टियर नहीं होता। बॉडी में वियर-टियर होता है। लेकिन हम वियर-टियर को, बॉडी को टाइम ही नहीं देते कि उस वियर-टियर को कर सके। हम फास्टिंग ही, हमारे शास्त्रों में बताई गई है। फास्टिंग आज हम कह रहे हैं। उसको नोबल प्राइज मिल गया कि फास्टिंग करने वालों को कभी कैंसर नहीं होगा। यह एक इंफॉर्मेशन है। लेकिन यदि हमारे शास्त्रों को उठाकर देखें। एकादशी होती है। कोई भी व्रत होता है। उसका अर्थ यही है। आप जब फास्टिंग कर रहे हो। तो उस समय में आप अपनी बॉडी के ऑर्गन को रेस्ट दे रहे हैं और इसका बहुत ही डीप रिलेशन है। क्योंकि आज हमारा लाइफ स्टाइल चेंज हो गया। आज हमारे पास कंप्यूटरस हैं। आज मॉडर्न लाइफ में जितनी भी चीजों को यूज कर रहे हैं। हमारे इस लाइफ स्टाइल डिजीज मतलब लाइफ स्टाइल से ही

बहुत सारी डिजीज ओरिजनेट हो रही हैं। लाइफ स्टाइल का मतलब है कि हमारी फिजिकल एक्टिविटी कम होती जा रही है और आज हम वो फूड खा रहे हैं।

जिसमें हमें एक्स्ट्रा एफर्ट लेकर हमारे डाइजेस्टिव सिस्टम को फूड को डाइजेस्ट करना पड़ रहा है। बॉडी के रिपेयर मकैनिज्म को हम खुद स्टॉप कर रहे हैं। तो इसी तरह से क्योंकि हम प्रकृति मां से बिल्कुल दूर जा रहे हैं और इसी तरह से इसी रास्ते पर चलते-चलते हमने नए-नए डिजीज को हम अपने अंदर आमंत्रित कर रहे हैं और आज हम यह सोचते हैं कि अगर हम किसी जींस के अगेंस्ट, डीएनए के अगेंस्ट, हम किसी r.n.a. के अगेंस्ट, हम किसी प्रोटीन के अगेंस्ट। कोई एक डिजाइन करके हम उस बीमारी का हल ढूंढ लेंगे। तो यह बिल्कुल ही एक ऐसा रास्ता, आज की तारीख में मुझे नजर आता है कि हमें जाना तो पूर्व की तरफ है और हमने पश्चिम की तरफ का रास्ता पकड़ लिया। तो मुझे ऐसा ही लगता है कि आज की मॉडर्न साइंस इसी दिशा में जा रही है। तो जिस दिन हम चीजों को बिल्कुल गहराई से समझेंगे कि बेसिकली रूट लेवल पर प्रॉब्लमस कहां पर हैं और हमें किस तरफ जाना चाहिए। उसी दिन शायद कोई भी ऐसी बीमारी हमारे शरीर में होगी ही नहीं। क्योंकि हमारे अंदर भगवान ने इनबिल्ट मकैनिज्म हीलिंग का एक ऐसा बनाया है कि बॉडी को पता है कि उसको किस तरह से रिपेयर करना है।

एक बहुत अच्छी चीज मैंने एक ओर भी पढ़ी थी और मैं शेयर कर रही हूं कि जैसे हम बहुत से इंजेक्शन ले लेते हैं। एक चीज है। हमारे शरीर के अंदर। हम यदि डिटेल में देखें। तो सैल के हर पार्ट में, बॉडी को रेगुलेट करने का एक बहुत ही रिफाइन मेकैनिज्म होता है। चाहे वो मेटाबॉलिज्म के पाथ वे पर हो। चाहे वो कोई भी पाथ वे हो। तो उसे पता है। यह चीज कम हो गई है। तो मुझे कौन सी चीज बढ़ानी है। बॉडी ऑटोमेटिकली नोज। तो हमारा नर्वस सिस्टम क्या करता है। हमारी पूरी फिजियोलॉजिकल सिस्टम को रेगुलेट करता है। एक तो बॉडी सेंस कर रही है कि बॉडी में कहां कमी है। बॉडी खुद ही सेंस कर रही है और वो उस बॉडी कोशिश कर रही है और दूसरा वो उस को रिपेयर करने के लिए वो नसैसरीली आउटपुट (output) दे रही है। सिग्नल दे रही है, बॉडी को कि अब तुम इसको इस तरह से रिपेयर करो। हम क्या करते हैं। आज हम मॉडर्न साइंस में, हम जाने लगे, इंजेक्शन की ओर, दवाओं की तरफ। तो हमने क्या करा। जब हमने मान लीजिए। कोई एक इंजेक्शन ब्लड में दे दिया। तो आप यह मान के चलो कि कोई भी इंसान इंसुलिन के इंजेक्शन लेने के बाद डायबिटीज से कभी भी ठीक नहीं हो सकता। क्यों नहीं हो सकता। क्योंकि जहां आप ने, इंजेक्शन का मतलब है कि आप ने वो पार्टीकूलर डोज जो बॉडी के अंदर कम थी। वो आप ने अडिशनली दे दी। अब यहां आप के ब्रेन को नहीं पता। यह ब्रेन के लिए डिसाइड नहीं है। ब्रेन आप की फिजियोलॉजी को देख रहा था। जो आप ने ऑल ऑफ सडन दे दिया और वो जाकर के मिल गया। तो यह ब्रेन के लिए कैसा हो गया। एक शॉकिंग सिग्नल हो गया कि ब्रेन को यह पता ही नहीं है कि यह मॉलिकयूल्स कहां से आया। क्योंकि वो तो फिजियोलॉजी को देख रहा है। तो यही एक ऐसे मुझे लगता है कि यही एक मूल भूत कारण है। जो किसी भी डिजीज के लिए आज रिसपॉसिबल है और हमारे अंदर चाहे इंसान को मतलब हर रास्ता इंसान के लिए ओपन है। वो आज जो भी है। जहां भी है। जिस रूप में भी खड़ा है। उसके अंदर आज पूरा-पूरा पोटेंशियल आज भी है कि वो अपने आप को मतलब सही रास्ते पर ले जाकर के अपना मन, वचन और कर्म से अपने इन पाथ वे को बदल सकता है और जितना-जितना हम इन पाथ को समझते चले जाएंगे। उतना ही आत्मा बिल्कुल एक सही रास्ते को, अपने आप अडॉप्ट करती चली जाएगी। मुझे तो भगवान का बनाया यह जो रास्ता है ना कि मायाजीत माया से दूर। कर्मातीत बहुत ही रिफाइन मकैनिज्म है। यदि हम इसको गहराई से समझें कि कर्मातीत अवस्था की कितनी ब्यूटीफुल नेचर। हमारे कर्म को हमारी आत्मा में रिकॉर्ड करती है और फिर जैसे-जैसे हम अपने कर्म बंधनों से मुक्त होते जाते हैं। हमें कर्मातीत बना देती है। दैट इज वेरी ब्यूटीफुल। इसको भी बहुत गहराई से इन सब चीजों को समझना चाहिए। तो यही मतलब मुझे सही रास्ता लगता है। जो मैंने आप सब के साथ शेयर किया। सब को परम शांति...